Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 1, Feb. 2012 **डॉ. मिलिंद साळवे** **ISSN:-2230-7850**

Research Papers

नदी पिछं नहीं मुडती उपन्यास में चित्रित परिवर्तित नारी

डॉ. मिलिंद साळवे
विश्वासराव नाईक कला, वाणिज्य एवं बाबा नाईक विज्ञान महा. शिराळा

विषय प्रवेश :

परंपरागत रूप से सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा पारिवारिक नियमों में पिसती नारी आज पढ–लिखकर केवल विद्वन नहीं बनी अपितु खुद के पैरों पर खडी होकर अपना तथा अपने परिवार का जीवन निर्वाह भी कर रही है। पढाई तथा नौकरी के लिए घर की चार दिवारी में बंद नारी आज खूली हवा में सांस लेने लगी है। अपने आस–पास की ही नहीं समस्त विश्व की जानकारी से भी वह आवगत हो रही है। इन समस्त बातों का परिनाम ये हुआ कि नारी आज की तिथि में अपने आप में परिवर्तन चाहने लगी है। वह अपना जीवन अपने विचारों से गुजारना चाहती है। उसके आज के विचार पुरातन विचारों की तरह सडे–गले नहीं है। आज वह खुद कमाकर खुद अपने विचारों के अनुपात में जीवन यापन करना चाहती है। आज वह किसी के सहारे या या आधार की मोहताज नहीं है। आज उसक विचारों में अधुनिकता झलकती नजर आ रही है। वह परंपराओं को ठुकरा रही है। उसके विचारों की उडान आसमान छू रही है। आज तक उसे पूरूष नकारते थे आज वह पुयषों को नकार रही है। उपनी इच्छा के अनुरूप जीवनसाथी न मिलने तक पुरूषें को आजमाती रहती है। इस कारण पुरूषों को बदलती भी रहती है। तथा अकेली भी रहकर जीवन व्यतित कर रही है। प्रस्तुत उपन्यास में से. रा. यात्री ने ऐसी ही उच्च विद्या विभूषित नारी को चित्रित करने का प्रयास किया है।

इस नायिका प्रधान उपन्यास की नायिका निशा महिला महाविद्यालय में अंग्रेजी की अध्यापिका है। विदुशी होने के साथ ही वह सुंदर तथा आकर्षक व्यक्तित्व की मालिक है। हर कोई उसके व्यक्तित्व की तरश्रफ आसनी से आकर्षित होता है। उपन्यसाकार उसके आकर्षण के संदर्भ में लिखते है, ''उसकी नाजूक कमर भरी भरी मांसल देह देखनेवाले की नजर हठात अपनी ओर खींचनेवाली थी।''[1] निशा केवल सुंदर ही नही अपितु उसमें सुंदरता और विद्वत्ता की बेजोड मिसाल है। लेखकों के संदर्भ में टीपन्नी करते हुए वह कहती है, ''मेरी दृष्टि से लेखक के अंदर एक खास किस्म की सनक होती है। उसके विना शयद उसका कर्म पूरा नहीं होता। अखिर शेकडों पात्रों की देह और मन में दाखिल होने के लिए कोई चमत्कारी शक्ति तो चाहिए ही।''[2] सुंदर और विदुषी होने के साथ ही निशा स्वच्छंदी और बात करने में स्पष्टवक्ता है। लेखक को परिभाषित करते समय उसके गुणें का बखान करने के पश्चात् वह व्यंग्य करते हुए कहती है कि ''और शायद यही वजह है कि लेखक न एक स्थान से बंधकर रह सकता है न एक व्यक्ति से बंधकर जीवन काट सकता है।''[3] इस तरह उच्च विद्या विभुषित सुंदर विद्वान आकर्षक व्यक्तित्व की मालिक तथा स्वच्छंदी और वाक्पटुता भी है। कुल मिलाकर निशा में वह सब खुबियॉ है, जो हर एक मर्द एक सहचरी, प्रेमिका या पत्नी में होने का मानस करता है। यही वजह है कि निशा के इर्द–गिर्द पंडरानेवालों की कोई कमी नही है। हर कोई उसका सामिप्य प्राप्त करना चाहता है। यह भी सच है कि जिसने भी उसकी कामना की वह

असफल ही रहा। पति तथा प्रेमि के रूप में जिस पुरूष को वह पाना चाहती है, इस संदर्भ में उसके विचार सामान्य नहीं है। शायद इसी वजह से एक सुंदर तथा संपन्न व्यक्ति से शादी होने के बावजुद उसे छोडकर इच्छित पुरूष की खोज में भटकती रहती है।

नारी चाहे जितनी पढी–लिखी हो, खुद कमाती हो, परिवार चलाती हो लेकिन समाज तथा धर्म की दृष्टि से वह कभी पुरूषों का स्थान प्राप्त नही ंकर सकी। आज भी समाज की दकियानूसी नियमों की शिकार होती रहीं है। नारी के प्रति समाज की इस मान्यता को निशा स्वीकार नहीं करना चाहती। समाज में नारी हर तरह से पीडित थी। प्राचीन काल से लेकर अबतक नारी की दशा में अंतर नहीं आया है। अठारहवीं सदी में नारी की दशा का वर्णन करते हुए डॉ. रामकूमार द्वारा संपादित पुस्तक 'भारतीय नारी' की भूमिाक में अपने विचार व्यक्त किए है। उनके विचार में, ''भारत में अभितक नारियों की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। उन्हें अपने जन्मजात अधिकार प्राप्त न थे। राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन से असका संबंध टूट चुका था। वे घर की चार दिवारी में बंद रहने वाली गठरी थी। धार्मिक रूप से भी उसका स्थान निम्न कोटि का था। कहा जा सकता है कि नारियों में केवल प्राणस्पंदन शेष था जीवन–गति अवरूद्ध हो गयी थी।''[4] अधुनिक नारियों में भी कुछ नारियॉ उस सदी के सदृष्य जीवन व्यतित कर रही है। पुरूष प्रधान संस्कृति में पुरूषों को भी इसी तरह की नारी पत्नी के रूप में चाहिए हाती है। उपन्यास की नायिका निशा उन परंपरागत बंधनों को ताक पर रख देती है। उसे लगता है कि सारी परंपराऍ तथा मान्यताऍ केवल नारी विरोधी है। उसकी दृष्टि से, ''हमारे देश में औरतों की जिंदगी कई तरह की अदृश्य बेडियों में जकडी हुई है, जिन्हें तोडने की कोशिश में वह लहू–लुहान हो जाती है। सारी वर्जनाऍ सिर्फ औरतों के लिए हैं।''[5] आज पढी–लिखी तथा स्वयंभू होने पर भी उसकी स्थिति में परिवर्तन नही ंआया है। इस बात को स्पष्ट करती निशा आगे कहती है, ''मैं जिन बेउियों की बात कर रही हूॅ वही वास्तव में कभी नहीं टूट पाती। यह सारा समाज पुरूष प्रधान है और वह कालांतर में बनाए हुए नियमों और नीतियों से सूत–भर भी इधर–उधर नहीं ंहोना चाहता।''[6] स्पष्ट है कि निशा नारी के स्वाधीनता की बात कर रही है। उसे नारी की जो स्वाधीनता आपेक्षित है वह जानती है कि समाज उस स्वाधीनता को कभी मान्यता नहीं देगा।

एक सुशिक्षित, सुसंस्कृत तथा संभ्रांत परिवार में शादी होने के बावजूद भी अपनी अकांक्षाओं के कारण शिा पति का घर छोड देती है, जबकि विवाह खुद उसकी मर्जी से हुआ था। निशा न ौकरी करती है। वह यह मानकर चलती है कि निर्वाह करने में उसे कोई दिक्कत नही ंना किसी के मदद की आवश्यकता है। जब पति रविंद्र के द्वारा उसे नौकरी छोडने के लिए कह दिया जाता है, तो शुरू–शुरू में टालने के पश्चात् वह इनकार कर देती है। इस बात को स्पष्ट करते हुए रविंद्र कहता है कि ''निशा अपने आप में संपूर्ण अनुभव करती थी। उसे अपने अलावा और भी किसी की जरूरत है ऐसा वह नहीं मानती थी।''[9] रविंद्र की दृष्टि से निशा आत्मनिर्भन होने के साथ ही एक बंहद थंडी औरत है, जो पति के समिप होने के पश्चात् भी मिलनोत्सुक नहीं होती। रविंद्र उसे लेकर एक महीना कश्मीर गए थे। दिन भर निशा का व्यवहार सामान्य रहता था लेकिन रात को वह बिल्कुल बेजान सी प्रतित होती। इस संदर्भ में रविंद्र का बयान बहुत कुछ मायने रखता है। वे लेचाक महोदय को बताते हुए कहते हैं, ''उसमें मेरे प्रति कैसा भी यौन उल्लास नहीं था। साथ सोती थी तो यही लगता था बर्फ की सिल्ली या लकडी का कुंदा मेरे साथ बेजान और बेहोश पडा हुआ है। जिसके मन में समर्पन की इच्छा न हो, कुछ लेने देने का रंच मात्र भी उल्लास न हो, ...।''[10] फिर भी रविंद्र उसे तलाक देना नहीं चाहता था। उसके कॉलेज चले जाने के बाद भी वह उसे प्रेम पत्र लिखता रहा था। स्पष्ट है कि रविंद्र की तरफ से संबंध तोडने की बजाए जोडने का प्रयास ही होता था। परंतु निशा द्वारा पति के मिलन उत्साह पर पानी फेर दिया जाता था। जब रविंद्र रिक्षा में उसे अपने करीब खिंचता है, तो उसका कहना कि रहने दो मैं गिरनेवाली नहीं हूॅ। या फिर '' अच्छा बाबा मेरे कंधे और पीठ पर हाथ रखने का इतना चाव है तो रख लो कोई दुसरा बहाना तलाश क्यों करते हो।''[11] निशा के इस तरह के व्यवहार के कारण रविंद्र को लगता है कि वह एक ठंडी औरत है।

एक लंबे अर्से के बाद लेखक रविद्र और निशा की दुबारा मुलाखात होती है। नरेंद्र को एक साहित्य समारोह के लिए देहरादुन आमंत्रित किया गया था। इस साहित्य समारोह का आयोजन भी निशा ने ही किया था। इस बात को तथा निशा के देहरादुन में मशहुर होने की बात को स्पष्ट करते हुए नरेंद्र का मित्र रजनिकांत बताता है कि ''इनके यहां लगभग प्रत्येक शनिवार को साहित्यिक गोष्टियॉ होती रहती हैं। यह

साहित्यकारों का सम्मान करने में हमेशा अग्रणी रहती है। ..... आप जिस फंक्शन में उाए है वही भी निशाजी की ही प्रेरणा से हुआ है।''[12] रजनिकांत के इस कथन से दो बाते सामने आती हैं, एक ये कि निशा को साहित्य तथा साहित्यकारों से लगाव है। और नरेंद्र को उसी के कहने पर बुलाया गया है। दुसरी बात यह कि देहरादुन में निशा के चाहनेवालों की कमी नहीं है। निशा जैसी आज की रारियों के बारे में प्रभा खेतान अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखती है, ''स्त्रीयों की यह नयी पीढी पितृसत्ताक परिवार के पारंपारिक ढांचे से ही निकली है। इस पीढी को विभिन्न तरह की वयस्क भूमिकाओं का सामना करना पडता है। समाजीकरण की नयी प्रक्रीया तथा पारंपारिक आदर्शों को थोडा बहुत नकारने को स्त्री बाध्य है। स्त्री का यह नया उभरता हुआ व्यक्तित्व बडा ही जटिल, असुरक्षित और सामाजिक संदर्भ में लचीला है। व्यक्तिकरण के बएते हुए दौर में संस्थाओं के बदले स्त्री आज अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को जादा महत्व दे रही है। अतः यौनिकता स्त्री की एक जरूरत है जिसे परिवार की संस्था के भीतर वह अलग से स्थन देना चाहती है।''[13] प्रस्तुत उदाहरण निशा के व्यक्तित्व से हूब–हू मेल खाता है।

अकेली नारी की असुरक्षा को लेकर प्रभा खेतान के द्वारा कही बात निश के व्यक्तित्व के विपरित है। कई पुरूषों से संबंध होने के बावजूद भी निशा को पुरूषों से डर नही लगता। वह बेपर्वाही से पुरूषों के बीच विचरण करती रहती है। उनके साथ सहजता से व्यवहार करती है। कई लोगों को लगता है कि निशा केवल अमीर लोगों को फांसती है। यही बात रविंद्र के मित्र रजनिकांत द्वारा कही जाती है, उसाक विरेध करते हुए नरेंद्र निशा के पक्ष में यह कहता है कि ''निशा आत्मनिर्भर औरत है। उसे किसी को फांसने की जरूरत नहीं है। असका व्यक्तित्व ही इतना आकर्षक और मधुर है कि लोग परवनों की तरह उस पर टूटते है।''[14] साहित्य समारोह के समापन के पश्चात् नरेंद्र और निशा मसूरी चले जाते हैं। उनके रहने की सुविधा एक कॉटेज में की जाती है। यह कॉटेज निशा के नए युवा आशिक प्रदीप की मिल्कियत है। प्रदीप की निशा से घनिष्टता देखकर नरेंद्र समझ जाते हैं कि प्रदीप भी राकेश की तरह निशा का आशिक है। रात को सेाते समय जब लेखक नरेंद्र के द्वारा कहा जाता है कि मैं आप की रक्षा बाहर से आनेवाले शेरों से तो कर सकता हूँ लेकिन जो अंदर है उनसे नहीं। नरेंद्र का इशारा प्रदीप की ओर था, इस बात से जरा भी विचलित हुए बिना निशा उत्तर देती है, ''उसकी मुझे कोई पर्वाह नहीं है। चारदीवारी के भितर रहनेवाले बबर शेर भी भेड बकरियों की श्रेणी में ही आते हैं।, इसे जानने के लिए औरत को कही नहीं जाना पडता।''[15] इस बात से स्पष्ट होता है कि निशा आत्मनिर्भर होने के साथ ही पुरूषों की नसन स से वाकिफ है। वह बडे यकिन के साथ कहती है कि कोई भी पुरूष बिस्तर पर औरत का कुछ भी नहीं बिघाड सकता।

देहरादून में निशा को देखते ही निशा ने अपने पति रविंद्र के साथ किया व्यवहार और नरेंद्र के मित्र राकेश के साथ किया व्यवहार इस बात को लेकर कई सवाल नरेंद्र को झकझोर रहे थे। नरेंद्र सोचता था कि हमेशा से उत्साही रहनेवाली निशा आखिर पुरूषों के करीब आने के पश्चात् ही ठंडी क्यों पड जाती है। जैसे ही उसे मौका लिता है निशा से इस संदर्भ में पुछ–ताछ करता है। पहले वह निशा के सामने रविंद्र की बात छेडता है। ओ पूछता है कि आखिर वह क्या वजह थी कि जिसकी बदौलत रविंद्र जैसे सुंदर और प्यारे बेहद प्यार करनेवाले पति को निशा ने छोड दिया ? इस बात का जबाब देते हुए निशा कहती है, ''उनमें मुझे वह कठोर पुरूषत्व कभी नहीं मिला, जों नरी को पूर्णता देता है। वह उससे ही संतुष्ट थे, जो मैं दयाभाव से उन्हें देती थी। पुरूष अपनी सामर्थ्य से नारी का भेग करे यही नारी के लिए तुष्टिदायक है। पुरूष की इसी शक्ति में वही अपनी सुरक्षा पाती है। अपी संपूर्णता में किसी को खंड–खंड करके दान नहीं दे सकती।''[16] अर्थात निशा अपना स्त्रीत्व किसी ऐसे पुरूष को सौपना चाहती है, जो उसे अपने पौरूषत्व से हासिल करे वही उसके लिए संतुष्टि प्रदान कर सकता है। ऐसी स्थिति में स्त्री और पुरूष दोनों भी मानसिक तथा शारीरिक दृष्टि से संतुष्ट हो जाते हैं। स्त्री पुरूष संबंध को लेकर डॉ. करूणा उमरे के विचार दृष्टव्य है, ''स्त्री–पुरूष संबंध एक सुकून देता है–भावनात्मकता के स्तर पर एक दूसरे के लिए जीने का, किंतु उससे उत्पन्न निराशा, घुटन भरे रारकीया जीवन की यातना भी सहने के लिए विवश करता है।''[17] स्पष्ट होता है कि निशा अपने पति रविंद्र से ना तो मानसिक स्तर पर और ना ही शारीरिक स्तर पर संतुष्ट होती है। यही वजह है कि वह अपने पति से तलाक लेती है।

पति रविंद्र से तलाक लेने के पश्चात् निशा राकेश के संपर्क में आ जाती है, जो कि एका कॉन्ट्रॅक्टर है। निशा राकेश के साथ घुमती–फिरती रहती है। पति–पत्नी की तरह एक ही कमरे में रहते है।

राकेश पूरी तरह निशा पर लट्टू है। निशा राकेश के साथ अलग–अलग जगहों पर घुमती–फिरती है। दिन भर अल्लड प्रेमिका की तरह चहकती रहती है परंतु धिरे–धिरे राकेश को भी निशा के ठंउे स्वभाव का परिचय होता है। राकेश निशा के लिए पागल है परंतु निशा उसे भी मझधार में छोडकर चली जाती है। नरेंद्र के द्वारा निशा के संदर्भ में राकेश को पूछा जाता है, राकेश उसकी वास्तविकता बयान करते हुए कहता है, ''दिन में तो वह मांडवगड में भी जबरदस्त खिलंदडी हो जाती–खूब किलकारियॉ मारती घूमती थी मगर रात को बिस्तर पर निढाल –सी पड जाती। ..... उतप्त प्यार के मेरे दाहक चुंबन भी उसमें कोई भाव नहीं जगा पाते थे। ऐसे समय में जबरदस्त हो उठता था और मेरे भितर विवशता का ज्वार उमडने लगता था। सच कहूॅ तो ऐसे मौकों पर मैं उससे भय खाने लगता था। मुझे वह भयंकर सेंडिस्ट (परपिडक) नजर आने लगती थी पर मैं उसके चुंबकीय आकर्षण से एक सेकिंड के लिए भी नहीं छूट पाता था।''[18] निशा के इस तरह के व्यवहार से राकेश जैसे पूरूष का पागल होना कोई बडी बात नहीं। राकेश उसे पत्नी के रूप में में पाना चाहता है। निशा के ठंडे व्यवहार के बावजूद निशा के प्रति उसके मन आकर्षण बर्करार है। राकेश निशा को नौकरी छोडने के लिए कहता है परंतु निशा उसे छोडकर चली जाती है। यह सही है कि ''यौन पवित्रता, सतीत्व, पतिव्रता धर्म जैसे प्रत्ययों के विषय में न पति चिंतित न पत्नी को कोई भी चिंता है वे संबंधों की भावुकता व औपचारिकता से दूर जा चुके हैं।''[19] इस बात से स्पष्ट होता है कि आज के कामकाजी युग में प्रेम अैर पति–पत्नी के संबंधें में रूक्षता आ गयी है। यही पत्नी तथा प्रेयसी अपनी इच्छाओं के प्रति सजग है। यह वजह है कि निशा अपनी वास्तविकता को ाीयानक रूप देती रहती है।

रविंद्र के पश्चात् नरेंद्र जब राकेश की बात छेडते हैं। नरेंद्र को यकिन है कि राकेश रविंद्र की तरह नहीं होगा। वह किसी भी स्त्री को संतुष्ट करने में सक्षम है। फिर भी उसे छोडने की वजह बताते हुए निशा कहती है, ''उनका जोर हमेशा इसी एक बात पर था तुम नौकरी छोड दो। ..... वह मेरी नौकरी छुडवाकर मुझे पराश्रित बनाने की भावना से बुरी रतह ग्रस्त थे।''[20] जाहीर–सी बात है कि निशा को अर्थिक दृष्टि से पराश्रित होना गवारा नहीं है। ''वैसे तो आज लगता है कि स्त्री पुरूष में बराबरी स्थापित हो गयी है पर छलावा मात्र है। पुरूष प्रधान समाज में औरतों का स्थान गुलाम जैसा है। वैवाहिक जीवन में भी मर्द ही फैसला करता है। और औरत उस पर अमल करती है।''[21] समाज की यही रीति है कि यहॉ औरतों को दुय्यम स्थान पर रखा जाता है, जब कि उसने हर मौके बे मौके पर खुद को साबित कर दिया है। निशा समाज के इन सडे गले विचार और रीतियों को नहीं मानती और ना मानना चाहती है। नरेंद्र के द्वारा समाज की दुहाई देने पर उसका कहना कि ''जिस समाज के लोगों की बाते आप मुझसे कर रहे हैं, उसमें स्त्री को कुछ भी चुनने की स्वतंत्रता नहीं है।''[22] निशा के इस कथन से स्पष्ट होता है कि आज तक परंपरा, संस्कृति, धर्म और समाज ने नारी को जिन अधिकारों से दूर रखा वही अधिकार आज के युग की नारी मांग रही है। वह परंपरा के नाम पर अपने अधिकारों का त्याग कर किसी ऐसे पुरूष के साथ जीवन व्यतित करने से इनकार करती है, जो उसे निर्बल समझकर तथा अर्थिक दृष्टि से परावलंबी बनाकर जीने के लिए बाध्य करता है। आज वह अपने लिए खूद साथी चूनना चाहती है और पसंद न आने पर उसे छोडकर किसी और की तलाश शुरू करती है। अपने जीवन साथी की खोज के संदर्भ में निशा नरेंद्र से कहती है, ''मेरी तलाश पूरी हो जाएगी मुझे आप पूर्ण समर्पित पाएंगे। मैं नहीं चाहती कि कोई मुझ पर इजारेदारी या शासन स्थापित करें। पर जिस दिन कूई ऐसा आदमी मिल जाऐगा जो मेरे भीतर अपना स्वत्व स्थापित कर देगा तो मैं अनजाने ही उसकी अनूगामिनी हो जाऊंगी।''[23] निशा के इस कथन से यही बात साबित होती है कि निशा या निशा जैसी आज की नारी जीवन साथी के रूप में पूर्ण पुरूष चाहती है।

निष्कर्ष :

सार रूप मे कहा जा सकता है कि उपन्यासकार से. रा. यात्री जी ने प्रस्तुत उपन्यास में नार के उस रूप का चित्रण किया है, जो आनेवाले समय में बहुत बडी मात्रा में तथा आज थोडी मात्रा में समाज में परिलक्षित हो रहा है। आज की नारी केवल शिक्षित नहीं है वरण वह खद के बलबुते पर अपना तथा समय आने पर अपने परिवार का चरितार्थ चला सकती है। वह दकियानुसी परंपराओं को त्यागकर अपनी उन्नति कर रही है। निशा जैसी पढी–लिखी उच्च विद्या विभूषित नारी समर्पन तो करना चाहती है परंतु केवल

उस पुरूष के सम्मुख जो उसे पूरी तरह संतुष्ट कर सके। जब तक उस तरह के साथी को प्राप्त नही कारती तब तक उसकी तलाश जारी रहेगी। इस सिलसिले में वह कई पुरूषों के साथ संबंध स्थापित करती रहती है। निशा का व्यक्तित्व मोहन राकेश के नाटक 'आधे अधूरे' में चित्रित सावित्री के व्यक्तित्व की याद दिलाता है। सावित्री और निशा में अंतर केवल इतना है कि सावित्री की दृष्टि से धन–दौलत भी महत्व रखती है। परंतु निशा धन को कोई एहमियत नहीं देती। वह तो केवल सुख चाहती है और पूरी तरह सूखी बना सके ऐसे पुरूष की तलाश करती है। दरसल निशा मर्दानगी का दावा करनेवाले दकियानुसी पुरूषों के गाल पर करारा तमाचा है।

संदर्भ सूची :

1.	नदी पीछे नहीं मुडती	से. रा. यात्री	पृ. 6
2.	वही	वही	पृ. 7
3.	वही	वही	पृ. 7
4.	भारतीय नारी सामाजिक अध्ययन	सं. डॉ. राजकुमार	पृ. 3
5.	नदी पीछे नहीं मुडती	से. रा. यात्री	पृ. 17
6.	वही	वही	पृ. 18
7.	वही	वही	पृ. 47
8.	वही	वही	पृ. 49
9.	वही	वही	पृ. 52
10.	वही	वही	पृ. 81
11.	बाजार के बीच बाजार के खिलाफ	प्रभा खेतान	पृ. 183
12.	नदी पीछे नहीं मुडती	से. रा. यात्री	पृ. 84
13.	वही	वही	पृ. 104
14.	वही	वही	पृ. 111
15.	स्त्री विमर्ष साहित्य और व्यवहार संदर्भ	डॉ. करूणा उमरे	पृ. 199
16.	नदी पीछे नहीं मुडती	से. रा. यात्री	पृ. 58
17.	नारी के बदलते आयाम	सं. डॉ. राजकुमार	पृ. 136
18.	नदी पीछे नहीं मुडती	से. रा. यात्री	पृ. 111
19.	महिला श्रमिक सा. स्थिति एवं समस्याएं	डॉ. जास्मिन लॉरेन्स	पृ. 12
20.	नदी पीछे नहीं मुडती	से. रा. यात्री	पृ. 111
21.	वही	वही	पृ. 111
22.	वही	वही	पृ. 111
23.	वही	वही	पृ. 112